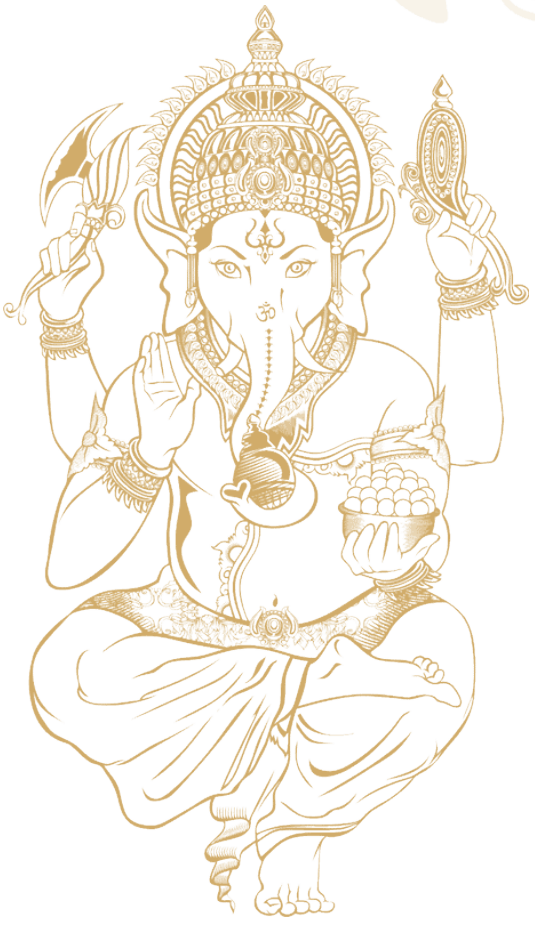

Mr.Amit Agrawal

Ms.Monu Agrawal

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119882304

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
19-20/12/1996 :	जन्म तिथि	: 13/03/1995
गुरु-शुक्रवार :	दिन	: सोमवार
घंटे 01:20:00 :	जन्म समय	: 16:39:00 घंटे
घटी 45:16:05 :	जन्म समय(घटी)	: 25:01:26 घटी
India :	देश	: India
Bhiwani :	स्थान	: Balangir
28:50:00 उत्तर :	अक्षांश	: 20:43:00 उत्तर
76:10:00 पूर्व :	रेखांश	: 83:29:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:25:20 :	स्थानिक संस्कार	: 00:03:56 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
07:13:33 :	सूर्योदय	: 06:07:15
17:32:05 :	सूर्यास्त	: 18:04:30
23:48:54 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:47:35

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
केतु 4वर्ष 5मा 4दि	17:02:36	कन्या	लग्न	सिंह	09:33:46	शनि 3वर्ष 10मा 3दि
सूर्य	04:23:31	धनु	सूर्य	कुंभ	28:36:55	शुक्र
25/05/2021	04:53:52	मेष	चंद्र	कर्क	13:58:14	14/01/2023
26/05/2027	00:56:18	कन्या	मंगल व	कर्क	20:10:16	14/01/2043
सूर्य 12/09/2021	24:04:50	धनु	बुध	कुंभ	04:11:21	शुक्र 16/05/2026
चन्द्र 13/03/2022	28:34:52	धनु	गुरु	वृश्चि	21:01:41	सूर्य 16/05/2027
मंगल 19/07/2022	09:25:18	वृश्चि	शुक्र	मक	18:38:16	चन्द्र 14/01/2029
राहु 13/06/2023	07:02:07	मीन	शनि	कुंभ	22:07:34	मंगल 16/03/2030
गुरु 31/03/2024	09:53:07	कन्या व	राहु व	तुला	14:11:25	राहु 16/03/2033
शनि 13/03/2025	09:53:07	मीन व	केतु व	मेष	14:11:25	गुरु 15/11/2035
बुध 18/01/2026	08:48:25	मक	हर्ष	मक	05:33:01	शनि 14/01/2039
केतु 25/05/2026	02:34:47	मक	नेप	मक	01:11:57	बुध 14/11/2041
शुक्र 26/05/2027	10:08:28	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	06:47:12	केतु 14/01/2043

लग्न-चलित

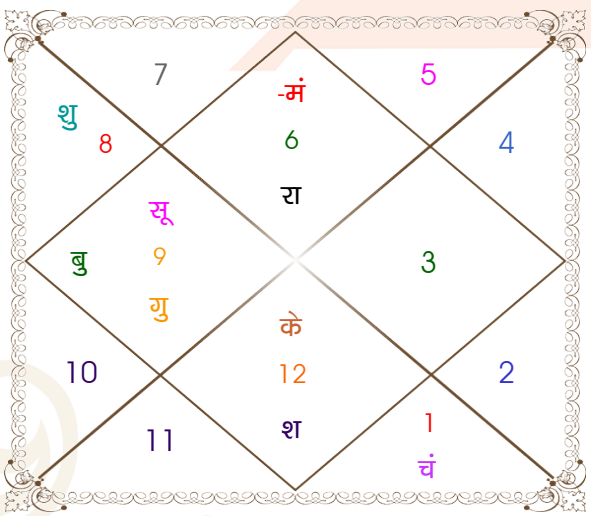

लग्न-चलित

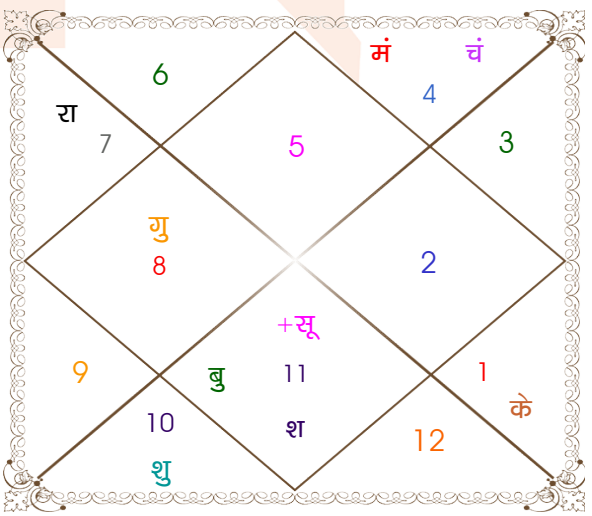

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	मेष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	30.50		

डतण ।उपज ।हतूंस का वर्ग सिंह है तथा डेण्डवदन ।हतूंस का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण ।उपज ।हतूंस और डेण्डवदन ।हतूंस का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण ।उपज ।हतूंस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु डतण ।उपज ।हतूंस कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्डवदन ।हतूंस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्डवदन ।हतूंस कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण्डवदन ।हतूंस कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र डेण्डवदन ।हतूंस कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डेण्डवदन ।हतूंस कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतप ।उपज ।हतूंस तथा डेण्डवदन ।हतूंस में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।